1

530

दृष्टि The Vision — drishti

Drishti Mentorship Programme (Mains)-2024

Essay

Name of Candidate:	Gaurav chhimwal	Subject/Code:	DMP- Essay-08
UPSC Roll No:	8500880	Date:	11 Aug 2024
Drishti Id:		E-mail Id:	[redacted]
Centre:	Delhi	Medium:	Hindi

Test Code:

Time allowed: Three Hours

Maximum Marks: 250

(To be filled by Evaluator only)		
Section	(Essay Topic No.)	Marks Obtained
A		
B		
Total		
Overall Feedback		

INSTRUCTIONS

कृपया प्रश्नों का उत्तर देने से पहले निम्नलिखित निर्देशों को ध्यानपूर्वक पढ़ें:

- प्रवेश-पत्र में प्राधिकृत माध्यम में निबन्ध लिखना आवश्यक है तथा इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू. सी. ए.) पुस्तिका के मुखपृष्ठ पर निर्दिष्ट स्थान पर करना आवश्यक है। प्राधिकृत माध्यम के अलावा अन्य माध्यम में लिखे गए उत्तरों पर अंक नहीं दिए जाएँगे।
- प्रश्नों के उत्तर निर्दिष्ट शब्द-संख्या के अनुसार होने चाहिए।
- प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़े गए किसी पृष्ठ अथवा पृष्ठ के भाग को पूर्णतः काट दीजिए।

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

- The ESSAY must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.
- Word limit, as specified, should be adhered to.
- Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

For Student Only			
Time Taken	Start Time: End Time:	Student Signature	
Mode of Examination	Online ☐ Offline ☐		

For Office Use Only				
Evaluators Code	Evaluator Sign	Evaluation Date	Reviewers Code	Reviewers Sign

Feedback				
Sr. No	**मापदण्ड/Parameters**	**Max. Marks**	**Section-A (Essay-1)**	**Section-B (Essay-2)**
1.	**परिचय:** विषय की स्पष्टता और सुसंगति। **Introduction:** Clarity of theme and Coherence	10		
2.	**विषय वस्तु:** प्रासंगिकता, विश्लेषण की गहराई और उदाहरणों/साक्ष्यों का उपयोग। **Content:** Relevance, depth of analysis, and use of examples/evidence.	25		
3.	**संरचना और संगठन:** तार्किक प्रवाह, पैराग्राफ संरेखण और विचारों की सुसंगतता। **Structure and Organization:** Logical flow, Paragraph alignment and Coherence of ideas.	20		
4.	**प्रासंगिकता:** विषय से विचलन की अनुपस्थिति, तर्क और पुष्टि/प्रमाणीकरण के बीच संतुलन **Relevance:** Absence of Deviation from Topic, Balance between argument and substantiation.	20		
5.	**भाषा और अभिव्यक्ति:** स्पष्टता, व्याकरण, वाक्यविन्यास, शब्दावली और अभिव्यक्ति **Language and Expression:** Clarity, Grammar, Syntax, Vocabulary and Articulation	20		
6.	**निष्कर्ष:** तर्कों और निष्कर्ष का प्रभावी सारांश। **Conclusion:** Effective summary of arguments and conclusion.	10		
7.	**मौलिकता और रचनात्मकता:** विचार और रचनात्मक अभिव्यक्ति में नवीनता। **Originality and Creativity:** Innovation in thought and creative expression.	20		
	कुल: Total:	125		

*** UPSC Requirement for Essay Paper:**

Candidates may be required to write essays on multiple topics. They will be expected to keep ***closely to the subject*** *of the essay to* ***arrange their ideas in orderly fashion*** *and to* ***write concisely.*** *Credit will be given for* ***effective and exact expression.***

*** निबंध पेपर के लिए यूपीएससी की अपेक्षा:**

उम्मीदवार को एक विनिर्दिष्ट विषय पर निबंध लिखना होगा। विषयों के विकल्प दिये जायेंगे। उनसे आशा की जाती है कि अपने विचारों को निबंध के ***विषय के निकट*** *रखते हुए* ***क्रमबद्ध*** *करें तथा* ***संक्षेप*** *में लिखें।* ***प्रभावशाली एवं सटीक अभिव्यक्तियों*** *के लिये श्रेय दिया जायेगा।*

Copyright – Drishti The Vision Foundation

निम्न खण्ड A व B प्रत्येक से एक विषय चुनकर दो निबन्ध लिखिए, जो प्रत्येक लगभग 1000-1200 शब्दों का हो :

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

Write two essays, choosing one topic from each of the following Sections A and B, in about 1000-1200 words each: **(125 × 2 = 250)**

खंड-A/SECTION-A

Topic: अपनी अवधारणाओं /विचारों की विलक्षणता से मत घबराइए, क्योंकि वर्तमान में स्वीकार की जाने वाली प्रत्येक अवधारणा कभी विलक्षण थी।

प्राचीन ग्रीक इतिहास में एक प्रसिद्ध दार्शनिक हुए सुकरात। एथेन्स नामक राज्य के निवासी सुकरात ने अपने तार्किक विचार, दर्शन से युवाओं, आम जनमानस में एक गहरी पैठ बना ली थी। वे तर्क करने, प्रश्न पूछने पर बल देते थे इससे एथेंस के आम जन तत्कालीन सत्ता तथा प्रशासन से विभिन्न मुद्दों पर तर्क, औचित्य की बहस करने लगे। एथेन्स की अदालत 'एलिया' में सुकरात के खिलाफ युवाओं को भड़काने के आरोप में मुकदमा दायर किया गया। वस्तुतः यह मुकदमा तत्कालीन सत्ता प्रमुखों द्वारा दायर किया गया क्योंकि वे यथास्थितिवादी समाज को अधिक पसंद करते थे। अदालत ने सुकरात को दोषी मानते हुए दंड स्वरूप मृत्युदंड

641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh
Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision | d

प्रदान किया।

हालांकि अदालत से सुकरात को अपने विचारों को प्रसारित न करने तथा माफी मांगने के एवज में सजा न देने का प्रस्ताव किया, किंतु सुकरात ने इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया, क्योंकि उनका मानना था कि वे अपनी बौद्धिक सत्यनिष्ठा से समझौता नहीं कर सकते हैं। साथ ही सुकरात ने अपने शिष्यों से कहा- यदि वे आज जीवित भी रह जायें तो इसके बाद उनके विचार मर जायेंगे अतः अपने विचारों को स्थायी रूप से जीवित रखने के लिए उन्होंने हैमलॉक नामक विष पी लिया और मृत्युदंड को स्वीकार किया।

इस घटना से सुकरात तो मर गये, लेकिन उनके विचारों की विलक्षणता ही थी कि उनके बारे में कहा जाता है- "

"उस प्याले में जहर था ही नहीं,
नहीं तो सुकरात कभी के मर गया होता।"

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

इस निबंध में हम यही जानने का प्रयास करेंगे कि विचारों की विलक्षणता क्या होती है? यह कैसे फायदेमंद है? विचारों की विलक्षणता के इतिहास में ऐसे कौन से उदाहरण भरे पड़े हैं? तथा वर्तमान समाज की इस संदर्भ में क्या स्थिति है? और उसमें क्या सुधार की गुंजाइश है।

सर्वप्रथम यह जानने का प्रयास करेंगे कि विचारों की विलक्षणता क्या होती है? विचारों की विलक्षणता से आशय है कुछ ऐसा नवीन अथवा मौलिक विचार जो वर्तमान में स्थापित सत्य से अलग हो या उसे खारिज करता हो। इस तरह विचारों की विलक्षणता समाजों में व्यापक हलचल भी पैदा कर सकता है। उदाहरण के लिए जहां पूर्व में चंद्रमा को एक देवता माना जाता रहा तो वहीं विज्ञान ने यह सिद्ध किया कि ये एक उपग्रह है। इस तरह यह विचार विलक्षण माना जायेगा क्योंकि यह मौलिक तो है ही साथ में यह स्थापित यथास्थिति को खारिज भी करता है।

drishti
641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh
Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

अब प्रश्न यह उठता है कि विचारों की विलक्षणता से क्यों नहीं घबराना चाहिए? ध्यातव्य है जब भी कोई नया विचार सामने आता है तो जनता या तो उसके प्रति उपेक्षा के भाव से देखती है या देखती ही नहीं है। जब संबंधित व्यक्ति अपने उस विचार को जन सामान्य में प्रसारित करने लगता है तो यथास्थितिवादी लोग जो स्थापित व्यवस्था के शीर्ष पर हैं वे उस विचार का प्रतिकार करना शुरू करते हैं।

प्रतिकार करने के क्रम में कभी कभी संबंधित व्यक्ति (प्रस्तावक) की जान पर भी खतरा आ जाता है। उदाहरण के लिए पारंपरिक इस्लाम में खुदा और बंदे में स्वामी-दास का संबंध माना जाता है किंतु जब मंसूर नाम के एक व्यक्ति ने सूफी मत से प्रेरित होकर खुदा से प्रेम का संबंध स्थापित किया तो तत्कालीन जड़ हो चुके लोगों ने पत्थर से मार-मार के मंसूर की जान ले ली, हालांकि

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

मैसूर मर के भी अमर हो गया।

हालांकि इस संदर्भ में एक प्रसिद्ध शायर की एक बात याद आती है-

"कब कोई बात कैसे कही जाती है।
सलीका हो तो हर बात सुनी जाती है।"

इस शायरी के मूल को ध्यान में रखते हुए अपनी विचार/अवधारणा का संप्रेषण किया जा सकता है। जब नया मौलिक विचार एक व्यापक लोक जनसमूह स्वीकार कर लेता है तो संबंधित समाज का बौद्धिक उत्थान तो होता ही है साथ में संबंधित व्यक्ति के जीवन पर आसन्न खतरे भी लगभग समाप्त हो जाते हैं।

अब हम इस तथ्य पर विचार करेंगे की क्या वर्तमान में स्वीकार की जाने वाली प्रत्येक अवधारणा कभी विलक्षण रही थी? ध्यातव्य है कि लोकतंत्र की वर्तमान अवधारणा पर गौर करें तो आज से 5-6 सदी पहले किसी ने यह सोचा भी नहीं होगा कि जनता का, जनता द्वारा, जनता के लिए भी शासन हो सकता है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

यद्यपि ब्रिटेन की गौरवमयी / रक्तविहीन क्रांति ने इसे सफल बनाया और धीरे-धीरे ब्रिटेन से यह व्यवस्था विश्व के अन्य देशों में गयी। अमेरिकी क्रांति, फ्रांसीसी क्रांति तत्पश्चात यूरोपीय क्रांति और उपनिवेशवाद विरोधी आंदोलन ने यह स्थापित कर दिया कि लोकतंत्र एक दिवास्वप्न नहीं अपितु हकीकत हो चुका है। इस तरह जहाँ पूर्व में यह अवधारणा अत्यंत विलक्षण प्रतीत हो रही थी आज यह एक स्थापित सत्य है।

इसी तरह वैदिक काल में जहां लोगों कि निष्ठा अपने कबीले के प्रति होती थी तो वहीं आगे चलकर भारत में विविध राज्य अस्तित्व में आये किंतु भारत में एक एकीकृत राजनीतिक व्यवस्था कभी भी स्थापित नहीं हो पायी थी। इसीलिए ब्रिटिश इतिहासकार स्ट्रैची जैसे विद्वान यह दावा करते थे कि भारत एक राष्ट्र नहीं अपितु राष्ट्रों का एक

drishti
641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh
Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

समूह है किंतु जब राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान गांधी, सुभाष, नेहरू जैसे नेता या उससे पहले सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन के नेता भारत को एक राष्ट्र के रूप में संगठित करने का प्रयास कर रहे थे तो अंग्रेज उनकी हँसी उड़ा रहे थे।

लेकिन आज यह गांधी, राम मोहन राय, विवेकानंद जैसे नेताओं की विलक्षण विचारों का ही परिणाम है कि आज भारत एक राष्ट्र के रूप में न सिर्फ संगठित है अपितु एक विश्व शक्ति के रूप में भी स्थापित है।

तकनीक के संदर्भ में देखें तो आज से 200 वर्ष पूर्व किसी व्यक्ति ने यह कल्पना नहीं की होगी कि वह ~~हवा~~ हवाई जहाज से संपूर्ण विश्व की यात्रा कर सकता है किंतु राबर्ट बंधुओं के मन में उस विचार की विलक्षणता का ही ~~परिणाम~~ परिणाम है कि आज यह कल्पना साकार हुई है और संपूर्ण विश्व इससे बहुआयामी रूप से लाभान्वित हो रहा है।

drishti
641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh
Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

ठीक इसी प्रकार पूर्व में जहां किसी के मन में यह विचार नहीं आया होगा कि विद्युत बल्ब जैसी भी कुछ संरचना होगी जो कि संपूर्ण विश्व से अंधकार को मिटाने की क्षमता रखता होगा। एडीसन के मन में उठे उस मौलिक विचार का ही परिणाम है कि वे अपनी खोज में सफल हुए। लगातार असफलताओं के बावजूद जब दुनिया उनकी मजाक उड़ा रही थी वे तब भी अपने विचारों की विलक्षणता से नहीं घबराए।

सामाजिक परिप्रेक्ष्य में देखे तो आज से 100-200 वर्ष पूर्व यह कोई सोच भी नहीं सकता था कि भारत जैसे जातिगत रूप से विभाजित समाज में एक अनुसूचित जनजाति से संबंधित महिला देश की राष्ट्रपति बन सकती है। किंतु यह भीमराव अंबेडकर, ज्योतिबा फुले जैसे विद्वानों की विचारों की विलक्षणता

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

का ही परिणाम था कि वे लगातार एक समतामूलक समाज की स्थापना हेतु प्रयत्नशील रहे और अपनी इस वैचारिक विलक्षणता के कारण बहुत से सामाजिक प्रतिकार, बहिष्कार झेलने पड़े लेकिन वो इन प्रतिकारों से घबराये नहीं। इस संदर्भ में हजारी प्रसाद द्विवेदी का यह कथन याद आता है -

"सत्य के लिए किसी से न डरना,
धर्म से नहीं,
शास्त्र से नहीं,
लोक से नहीं॥"

इसी तरह मध्यकाल में सूफी संतों तथा संत कवियों ने भी अपनी वैचारिक विलक्षता का परिचय इस रूप में दिया कि एक तरफ तो उन्होंने सामाजिक कुरीतियों पर प्रखर चोट की तो वहीं समाज में प्रेम के तत्व पर बल भी दिया। कबीर हिंदू तथा मुसलमानों में सहयोग करने के लिए कहते हैं -

"हिंदू कहत है राम हमारा, मुसलमान रहमाना।
आपस में दोऊ लड़ते हैं मरम कोई नहीं जाना॥"

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

धर्म के क्षेत्र में इसी वैचारिक विलक्षणता का परिणाम है कि हमारे समक्ष बौद्ध और जैन जैसे दुनिया के दो प्रगतिशील धर्म हैं। यदि बुद्ध या महावीर अपने विचारों की विलक्षणता से घबरा जाते तो संभवतः हमें मध्यम मार्ग, पंचव्रत, अणुव्रत, स्यादवाद जैसे सिद्धांत कभी भी सुनने को नहीं मिलते।

इस तरह उपरोक्त उदाहरणों से यह स्पष्ट है कि आज के समाज में स्थापित प्रत्येक अवधारणा कभी विलक्षण ही थी। यदि इन विचारों की विलक्षणता से इनके प्रस्तावक घबरा जाते तो ये सभी अवधारणा आज हमारे समक्ष नहीं होती। इसका परिणाम यह होता कि राजनीति, समाज, धर्म, विज्ञान, बौद्धिकता का विकास रुक जाता और हम आज भी पाषाण युग में शिकारी और खाद्य संग्राहक की जिंदगी जी रहे होते।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

विचारों की विलक्षणता को वर्तमान संदर्भ में नजर डालें तो यह स्पष्ट होता है कि शिक्षा व्यवस्था एक तरह की कठपुतलियाँ कक्षाओं में तैयार कर रही है जिनमें किसी भी प्रकार की मौलिकता नहीं है। इसी कारण आइंस्टीन तथा जॉर्ज बर्नार्ड शॉ जैसे विद्वानों ने वर्तमान शिक्षा व्यवस्था की आलोचना की।

इसी प्रकार राजनीति में भी नये विचारों, संकल्पनाओं को प्रोत्साहित नहीं किया जाता है उदा० के लिए महिलाओं का प्रतिनिधित्व कम (78/543) होना, युवाओं का प्रतिनिधित्व नहीं होना जैसी चिंताएँ राजनीति को समावेशी तथा मौलिक बनने से रोक रही हैं।

शोध संस्थानों पर नजर डालें तो भारत में GDP का मात्र .6% R&D पर खर्च हो रहा है जिसके कारण नये शोध हतोत्साहित हो रहे हैं। समाज के स्तर पर चर्चा की संस्कृति के बजाय अनुकरण की संस्कृति ने जन्म लिया है जिसके

Copyright - Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

कारण मौलिक चिंतन, शोध, विचार तो अब दूर की वस्तु हो गयी है।

उपरोक्त कारणों से भारत में नवाचार की स्थिति नहीं देखी जा रही है। परिणामतः लकीर का फकीर जैसा समाज निर्मित हो गया है। इस संदर्भ में केदारनाथ अग्रवाल की निम्न पंक्तियां याद आती है-

"कोई फर्क नहीं पड़ता
सड़क पर लिख दो प्यार
या जहां लिखा है प्यार
वहां लिख दो सड़क
कोई फर्क नहीं पड़ता"

इस तरह भारतीय समाज को उपरोक्त निर्जीव किस्म की व्यवस्था से बाहर निकालना अत्यंत जरूरी है ताकि लोग अपनी मौलिकता का प्रदर्शन करें और उससे समाज राजनीति, विज्ञान के विकास का मार्ग प्रशस्त हो।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

रार्बट फ्रास्ट ने कहा है-
"एक जंगल में दो रास्ते थे, मैंने कम लोगों वाला रास्ता चुना, इसी से सारा फर्क पैदा हुआ।"

यह कम लोगों वाला रास्ता चुनने की शिक्षा, हिमारे शिक्षण संस्थाओं, विश्व विद्यालयों, परिवारों से सिखाई जानी चाहिए ताकि लोग अपनी विलक्षणता से घबराएं नहीं अपितु उसका उपयोग संपूर्ण देश, समाज को लाभान्वित करने में करें।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

Remarks for Essay-1

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision | d

खंड-B/SECTION-B

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(8) Topic: आरंभ, किसी कार्य का महत्वपूर्ण पहलू होता है।

एक किसान के पास एक खरगोश तथा एक कुत्ता था, एक दिन उसने उनके साथ खेल-खेलने की सोची। किसान ने एक खेत में एक हड्डी और एक गाजर जमीन में गाड़ दी और फिर अपने कुत्ते और खरगोश से कहा कि वो उस हड्डी और गाजर को खोजें। खेत बहुत बड़ा था अतः कुत्ते ने सोचा। इतना बड़ा खेत है पता नहीं कहाँ वह हड्डी तथा गाजर होगी, वह एक स्थान पर चुपचाप बैठ गया। जबकि खरगोश जगह-जगह बिल बनाता, खोदता उसे ढूंढने का प्रयास करने लगा अंत में जब सारे खेत में ढूंढने के पश्चात उसे वह हड्डी तथा गाजर नहीं मिली तो अचानक उसके दिमाग में बात आई कि उसके कुत्ते की बैठी हुई जगह पर खोज नहीं की है अतः उसने कुत्ते से उठने को कहा और वहीं जमीन खोदने पर उसे

drishti
641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh
Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

हड्डी और गाजर प्राप्त हुई।

यह प्रतीकात्मक कहानी है जो यह स्पष्ट करती है यदि कृता कार्य आरंभ करता तो तुरंत उसे सफलता मिल जाती। परंतु क्योंकि उसकी अपनी दृष्टि अपने काम पर न होकर पूरे खेत पर थी इसलिए वह आरंभ भी नहीं कर पाया और उसे सफलता भी नहीं मिली। इसी संदर्भ में 'आरंभ' के महत्व की याद दिलाती किसी शायर की निम्नलिखित पंक्तियाँ महत्वपूर्ण है-

"अंतर से लड़ो, तुंद लहरों से उलझो
यूँ कब तक चलोगे किनारे- किनारे॥"

इस निबंध में हम यह जानने का प्रयास करेंगे कि 'आरंभ' किसी कार्य का सबसे महत्वपूर्ण पहलू क्यों है? इतिहास में ऐसे कौन- कौन से उदाहरण है जो आरंभ के महत्व को प्रतिबिंबित करते है। क्या किसी कार्य।यात्रा में केवल आरंभ ही महत्वपूर्ण है? यदि नहीं तो कौन से अन्य ऐसे तत्व हैं

drishti
641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh
Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

जो इस संदर्भ में महत्व रखते हैं।

'हजारों मील लंबे सप्फर की शुरुआत एक कदम से ही होती है।"

यह कथन किसी आगीरथ कार्य में आरंभ के महत्व को स्थापित करता है। आरंभ का तात्पर्य है किसी विचार / उद्देश्य की प्राप्ति हेतु पहला कदम बढ़ाना अथवा छोटा सा प्रयास करना। आरंभ का महत्व यह है कि इससे संबंधित व्यक्ति को मार्ग का भान होने लगता है और धीरे-धीरे संकटों से परिचित होते हुए, उनका मुकाबला करते हुए अपने लक्ष्य पर पहुँचता है।

हालांकि आरंभ करने का यह मतलब नहीं है कि संबंधित व्यक्ति को सफलता मिलनी तय हो गयी है। नहीं, यह सफलता को 100% सुनिश्चित तो नहीं करता है। हाँ, यह जरूर सुनिश्चित कर देता है कि संबंधित व्यक्ति उस उद्देश्य हेतु अपनी पात्रता को बढ़ाने का प्रयास कर चुका है। सफलता की संभावना इससे स्वयं से कुछ प्रतिशत तो निश्चित रूप

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | 641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh
Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

से बढ़ जाती है।

इतिहास के ऐसे प्रयासों पर गौर करें तो यह स्पष्ट होता है कि इतिहास में वही नाम दर्ज हो पाते हैं जिन्होंने किसी लक्ष्य को प्राप्त करते हुए अपने प्रयास कभी शुरू किए थे। इन प्रयासों में आरंभ का महत्व अत्यधिक था।

बुद्ध यदि राजमहल को नहीं छोड़ते तो संभवतः आज हमारे समक्ष बुद्ध के व्यक्तित्व तथा कृतित्व का प्रमाण नहीं होता। यह राजमहल छोड़ने और सत्य की खोज में निकलने का ही परिणाम था कि आज हमारे समक्ष मध्यम मार्ग, क्षणिकवाद, अनित्यवाद, सामाजिक समता, आडंबर से रहित जैसे मूल्यों से युक्त बौद्ध दर्शन व धर्म है जो हजारों-करोड़ों लोगों को एक प्रकार की नई जीवन दृष्टि दे रहा है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

इसी प्रकार महावीर यदि 'कैवल्य' की दिशा में आरंभिक प्रयास नहीं करते तो न तो हमें आज करुणा, अहिंसा से युक्त जैन धर्म मिलता न ही स्यादवाद तथा अपोहवाद जैसा दर्शन।

पुनर्जागरण काल के दौरान यूरोप में यदि रूसो धर्म तंत्र तथा कुलीन तंत्र के खिलाफ अपनी 'प्रकृति की ओर लौटे' जैसे सिद्धांत नहीं देते तो आगे के विचारकों को किसी भी प्रकार की प्रेरणा नहीं मिल पाती। इसी प्रकार मॉन्टेस्क्यू यदि 'शक्ति के पृथक्करण' का सिद्धांत नहीं देता तो संभवतः आज भी राजतंत्र ही दुनिया को संचालित कर रहे होते इस तरह राजनीतिक प्रगति की दिशा में भी आरंभिक प्रयासों का विशेष महत्व है। क्योंकि ये आरंभिक विचार / प्रयास एक बीज का कार्य करते हैं जिन पर भविष्य में एक वृक्ष निर्मित हो जाता है।

भारत के राष्ट्रीय आंदोलन पर नजर डालें तो यदि सामाजिक - धार्मिक रूप से विखंडित और तमाम जड़ताओं

drishti
641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh
Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

से प्रबत समाज की चुनौतियों को देखकर
राम मोहन राय, विवेकानंद, ज्योतिबा फुले,
अंबेडकर, दयानंद सरस्वती जैसे विचारक
इन जड़ताओं को तोड़ने हेतु आरंभिक
प्रयास न करते तो न तो राष्ट्रीय
एकता सुनिश्चित हो पाती और न
ही राष्ट्रीय आंदोलन जैसा अन्य
आंदोलन खड़ा हो पाता, यह सामाजिक
धार्मिक सुधार आंदोलन के प्रतिनिधियों
के आरंभिक प्रयासों का ही परिणाम
था कि न सिर्फ आगे चलकर गांधी,
तिलक, सुभाष जैसे राष्ट्रवादी नेता उदित
हुए, अपितु, साम्राज्यवादी शोषण की व्यवस्था
भी समाप्त हुई।

आज हम सभी सूचना के
अधिकार का प्रयोग करते हुए सरकार
से विविध प्रकार की सूचनाओं की
मांग करते हैं, और वे हमें प्राप्त भी
होती हैं। यदि इस व्यवस्था हेतु आंदोलन
के मूल पर नजर डालें तो राजस्थान
के पालि गांव से यह आंदोलन
MKSS के नेतृत्व में शुरु हुआ था।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

और धीरे-धीरे यह आंदोलन पूरे देश में फैल गया और अंततः वर्ष २००५ में सरकार को सूचना का अधिकार अधिनियम लागू करना पड़ा। इस तरह चाहे राजनीतिक सुधार हो या प्रशासनिक 'आरंभ' हमेशा मायने रखता है।

पर्यावरण के संरक्षण की दृष्टि से भी आरंभिक प्रयासों का अपना महत्व रहा है। ध्यातव्य है कि वर्ष 1972 में चमोली के रैणी के जंगलों में गौरा देवी के व्यक्तिगत विरोध से चिपको आंदोलन शुरू हुआ और धीरे-धीरे सुंदरलाल बहुगुणा तथा चंडी प्रसाद भट्ट के नेतृत्व में यह आंदोलन संपूर्ण उत्तराखंड में फैल गया। इस तरह एक आरंभिक प्रयास से शुरू यह आंदोलन उत्तराखंड के जंगलों का रक्षक बन कर उभरा।

एक देश के रूप में भारत की विकास यात्रा पर नजर डालें तो यह स्पष्ट होता है कि 1947 के भारत में न सिर्फ गरीबी,

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

Copyright - Drishti The Vision Foundation

अशिक्षा, कमजोर स्वास्थ्य प्रणाली जैसी दशाएं विद्यमान थी बल्कि यह खाद्य असुरक्षा हेतु USA की PL480 योजना पर निर्भर था। लेकिन हरित क्रांति के प्रारंभिक प्रयास ने न सिर्फ भारत को खाद्य सुरक्षा में आत्मनिर्भर बनाया अपितु, वर्तमान में भारत खाद्य निर्यातक के रूप में भी उभरा है। इसके अतिरिक्त हालिया नीति आयोग की रिपोर्ट से यह भी स्पष्ट होता है कि गरीबी में उत्तरोत्तर कमी आयी है।

व्यक्तिगत जीवन में 'आरंभ' का अपना विशेष महत्व है, क्योंकि यही वह प्रक्रिया है जो किसी व्यक्ति को अन्य से अलग खड़ा करती है। स्वयं नेल्सन मंडेला ने कहा है "महानता कभी भी असफल न होने में नहीं है अपितु हर बार असफल होकर दुबारा प्रयास करने में है।" वही व्यक्ति जीवन में सफल हुआ है जिसने 'रिस्टार्ट' अर्थात् दुबारा आरंभ

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

को अपने जीवन का सहज हिस्सा बनाया है, खेल के उदाहरणों को देखें तो हाल ही में पेरिस ओलंपिक में ब्रांज मेडल जीते अमन शेहरावत ने मात्र 11 साल की उम्र में अपने माता-पिता को खो दिया था। किंतु आरंभ करने की इसी प्रवृत्ति ने उन्हें अन्य से अलग कतार में खड़ा किया।

अब प्रश्न यह उठता है कि क्या जीवन में सफल होने के लिए केवल आरंभ करना ही महत्वपूर्ण है? वास्तव में है कि आरंभ करना महत्वपूर्ण तो है लेकिन पर्याप्त नहीं। प्राय: मार्ग में विविध प्रकार की चुनौतियां आते रहती हैं इसलिए उनसे न घबराते हुए, डटकर उनका सामना करके, निरंतर प्रयास, धैर्य, लगन जैसी प्रवृत्तियां भी इस प्रक्रिया में सहयोगी हैं। चुनौती को देखकर उससे घबराने की प्रवृत्ति तथा दूसरों पर दोषारोपण कर जिम्मेदारी से भागने की प्रवृत्ति आरंभ पर कई बार भारी पड़ती है।

drishti
641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh
Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

इस संदर्भ में सहसा ही राहत इंदौरी कि निम्नलिखित शायरी मन में कौंध उठती है-

"न हमसफ़र से निकलेगा, न हमनशीं से निकलेगा
हमारे पाँव का काँटा, हमी से निकलेगा।"

इस तरह यह स्पष्ट है कि अपने अंतर्मन से निर्णय लेकर, किसी बड़े उद्देश्य को लक्षित करते हुए, आरंभिक प्रयास महत्वपूर्ण तो है लेकिन पर्याप्त नहीं, किसी भी कार्य को सिद्ध करने के लिए आवश्यकता इस बात की होती है कि धैर्य, लगन, लगातार मेहनत करने की प्रवृत्ति इत्यादि भी व्यक्तित्व में शामिल हो। इस संदर्भ में अब्राहम लिंकन का उदाहरण दिमाग में आता है जो कई बार चुनाव हारे लेकिन अंततः अमेरिका के सफल राष्ट्रपति के रूप में स्थापित हुए।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

"सोचते रहने से कहाँ रास्ता मिलता है,
सर में सौदा हो तो दीवार में दर बनता है।"

उपरोक्त शायरी यह दर्शाती है कि किसी भी कार्य सिद्धि हेतु आरंभ तो महत्वपूर्ण है ही, साथ में जुनून, लगन इत्यादि भी महत्वपूर्ण होते हैं। हालांकि आरंभ इसके लिए एक अनिवार्य शर्त है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

Remarks for Essay-2

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

SPACE FOR ROUGH WORK

* पत्थर तबियत से, तं,प से
  * न हो सकता
  * कौन कहता है आसमां में सुराख

उदा० बुद्ध, जैन
रूसो - पुनर्जागरण
मांटेस्क्यू - शक्ति का पृथक्करण
रा० आंदोलन - गांधी
कोलंबस
[illegible]
* [illegible]
* विराट कोहली
एक किसान → दुष्यंत / गजल

Intro → दुष्यंत / गजल
पत्थर तबियत से
हजारों मीलों का सफर एक कदम

② आरंभ क्यों महत्वपूर्ण है, क्या केवल आरंभ ही महत्वपूर्ण है, इतिहास में कौन-कौन उदाहरण

③ क्यों

④ इतिहास

⑤ आरंभ ही महत्वपूर्ण

⑥ कौन

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

SPACE FOR ROUGH WORK

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

③ Example - सुकरात, गैलिलियो, ब्रूनो, केपलर, मंसूर - सूली, एडीसन

'सत्य के लिए किसी से न डरना, लेकिन धोखा न लेना से नहीं।'

'एक जंगल में दो रास्ते -' राबर्ट फ्रास्ट

'जाति पाति -'

राममोहन
दयानंद
RTI - MKSS
कबीर → जाति, हिंदू धर्म

① सुकरात
①. विचार की विलक्षणता.

विचार : अवधारणा।

② फायदा?

④ घबराना क्यों नहीं है।

विचारों की विलक्षणता : से बचें नहीं घबराना है।

⑤ वर्तमान स्थिति

स्वीकार की जाने वाली प्रत्येक अवधारणा कभी विलक्षण ही थी।

उस प्याले में जहर था ही नहीं।

Intro - ① सुकरात

② विचार क्या है, विलक्षणता : इतिहास में

P E S
= व्यवहार नहीं

P E S Ⓣ E L
H E D E
R+D
शिक्षा,
अनुसंधान

① सुकरात
②

⑥ क्या करें?

Conclusion

ऋद्धि - ग्लोबल - विकास - राबर्ट ब्रेड - एडीसन - विज्ञान
E S T E C
टेस्ला
LGBTQ
विवेकानंद
अंबेडकर
कबीर
गांधीजी
राबर्ट ब्रेड
लूथर किंग
मंडेला
CC

Copyright – Drishti The Vision Foundation